“ सतगुरु पंथ की प्रार्थना ”

सद्गुरू , सद् ज्ञानदाता,

“ सत्यपद ” अब दीजिये।

मोक्ष, मुक्ती, ज्ञान भक्ती,

आत्मशक्ती दीजिये ।।

“ सद्गती ”, और “ सद्मती ”,

"सद्बुद्धि " हमको दीजिये।

अनहद, प्रकाश, हैं किरण जिसकी,

वह अजन्मा दीजिये।।

नाम, रूप हैं द्वैत के सब,

सतनाम हमको दीजिये।

साधन, भजन सब द्वैत के हैं,

अद्वैत हमको दीजिये।।

निर्गुण, सगुण मन पंथ हैं,

अपरोक्ष भक्ती दीजिये।

तन, मन, सुरत से पार जो पद,

वह परमपद दीजिये।।

योग, जप, तप, मन के हैं,

“ सतधार ” हमको दीजिये।

आत्मघट पर घटित जो है,

वह त्रिवेणी दीजिये।।

परिधि पर हम रह रहे हैं,

केन्द्र हमको दीजिये।

सुमिरन, भजन है किया अब तक,

सन्मुख की भक्ती दीजिये।।

स्वर्ग की थी चाह मन में,

अब अमरपद दीजिये।

सोंचते थे मनुज देहीं,

अब विदेहीं दीजिये।।

नर देंह हमको मिल गयी,

अब पूर्ण हमको कीजिये।

अभी तक मन है विमुख,

मन को भी सन्मुख कीजिये।।

मन मेरा पूरा नहीं,

संसार कैसे पूर्ण हो।

मन ही तो संसार है,

अब मन को पूरण कीजिये।।

मन को समर्पित रहे अब तक,

अब मन समर्पित कीजिये।

आत्म संचालित बनें हम,

धार वह अब दीजिये।।

ज्ञान से मिलता नहीं है,

बोध हमको दीजिये।

लेने वाले ही मिले सब,

देने वाला दीजिये।।

वेद जिसको नेति कहते,

वही हमको दीजिये।

ब्रम्हा, विष्णु, प्रकट जिससे,

सतपुरुष वह दीजिये।।

नाम जिसका है नहीं,

ऐसा अनामी दीजिये।

देव, ऋषि कोई न पाया,

वही हमको दीजिये।।

योग, जप, तप, किया अब तक,

" हो घटित " वह दीजिये !

कर्म सब होते रहें,

" अकर्म " गति ही दीजिये ॥

" आत्मघट " कैसे हो परगट,

भेद इसका दीजिये !

सूर्यरथ, गीता के रथ की,

" डोर " हमको दीजिये !!

गुरू तो खोजे बहुत,

अब " सद्गुरू " ही चाहिये।

अवतार हर युग में हुये,

अवतार खुद में चाहिये।।

जितना भी " चाहा " मिले सब,

पूर्ति " सब " की कीजिये।

एक साधे सब सधे,

वह " युक्ति " हमको दीजिये।।

मोहनदयाल, परमदयाल,

दातादयाल का पंथ यह ।

भेद जानो पंथ का तुम,

सदगती, सतज्ञान लो ।।

राधा स्वामी है यही,

इस सार को तुम जान लो ।

पंथ सतगुरु धार लो,

और धार को पहचान लो ।।

आरती

कोटि, कोटि करूँ वंदना,

अरब, खरब परनाम ।

केवल सद्गुरु के मिले,

स्वयं मिले सतनाम ॥

एकै सद्गुरु के मिले,

फल अनन्त मिलि जाँय।

एकहि साधे सब सधे,

सबहिं पूर्ण होइ जाँय॥

सिन्धु रूप अध्यात्म को,

बूँद रूप में लाय।

मन सन्मुख करि आत्म के,

जीव को सिन्धु बनाय॥

कोटि, कोटि करूँ वंदना - - - - -

सद्गुरु मन को साधकर,

करते सन्मुख आत्म।

तुरत ही मन पूरण हुआ,

जीव बन गया आत्म॥

केवल मन सन्मुख किये,

मन पूरण होइ जाय।

पूरण मन से सब मिले,

जो सोंचो वह पाय॥

कोटि, कोटि करूँ वंदना - - - - - -

पूर्ण मन संसार में,

पूर्ण करे सब काम ।

सदा ही मन सन्मुख रहे,

प्रकट सदा सतनाम ॥

काया कल्प हो जीव का,

मोक्ष, मुक्ति मिलि जाय।

सन्मुख मन और पूर्ण हो,

काग हँस बनि जाय॥

कोटि, कोटि करूँ वंदना - - - - - -

शारद, शेष, महेश, बिधि,

आगम निगम पुराण।

नेति, नेति "जेहि" कहहि सब,

धार, सतगुरु, जान ।।

सद्गुरु है सबसे बड़े,

बड़ा है सतगुरु पंथ।

एकै सद्गुरु के मिले,

मन पूरण और हँस॥

कोटि - कोटि करूँ वंदना - - - - - -

सुरेशा दयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)